

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान



वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान
पी.बी.नं.1061, आर एस पुरम, कोयम्बतूर - 641 002.

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, अप्रैल 1988 में वन अनुसंधान केन्द्र कोयम्बतूर और दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में स्थित अन्य शोध विभाग एवं कॉलेज के द्वारा निर्मित हुआ। यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद के अंतर्गत कार्यरत है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद का मुख्य लक्ष्य वनों से संबंधित मुद्दों के निपटान हेतु ज्ञान तकनीकी और समाधानों को उत्पन्न करना, संरक्षित करना, बांटना और प्रसार करना और अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के द्वारा धारणीय आधार पर वन, पर्यावरण तथा लोगों के मध्य अंतर्क्रिया से उत्पन्न अंतर्सम्बन्धों को बढ़ावा देना आदि है।

आदेश :

आदेशित नगरो में आनुवंशिक भिन्नता का मूल्यांकन करना, पश्चिम एवं पूर्व घाटों की वनों एवं द्वीप वनों की विभिन्नता को पहचानना और वनों में उपलब्ध देशज वर्गों के लिये उत्पादकता वृद्धि पर कार्य करना, जैव विविधता संरक्षण के अतिरिक्त अधिक आर्थिक के, चुने हुए असाधारण वर्गों पर कार्य करना और आजीविका वृद्धि में योगदान देना एवं वृक्ष पर आधारित उद्योग में होने वाले कार्यक्रमों में विकास करना है। इसके अतिरिक्त वन विभागों, उद्योगों और आदेशिक नगरों के अन्य हिस्सेदारों के द्वारा सामना किये जाने वाली समस्याओं पर भी वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कार्य करेगा।

आधिकारिक राज्य :

तमिलनाडु, केरला, पुदुचेरी, अन्डमान और निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप।

आधारभूत प्रयोगशालाएँ

आनुवंशिकी सुधार
डीएनए फिंगरप्रिंटिंग
जिनोमिक्स
ऊतक संवर्धन
कक्षिका संवर्धन
कीट विज्ञान
कीट विकृति विज्ञान
विकृति विज्ञान
पादप रसायन शास्त्र
पादप स्वास्थ्यकर
बीज परीक्षण
भूमि और जल

सुविधाएँ

परीक्षण स्थल
संवर्धन स्थान
वानस्पतिक प्रसारण परिसर
ग्लास हॉउस अण्ड मिस्ट चेम्बर
ओपन टॉप चेम्बर
बीज बैंक और बीज संसाधन इकाई
वनस्पति संग्रहालय
वानस्पतिक उद्यान
पुस्तकालय
परिकलक प्रयोगशाला
सूक्ष्मदर्शिकी और बिंब विश्लेषण
पीसीआर प्रयोगशाला



अनुसंधानिक उपलब्धियाँ :

वन विभागों, वन विकास निगमों, काष्ठ पर आधारित उद्यमों, किसानों और अन्य उपभोक्ताओं को आनुवंशिक रूप से उन्नत बीजों की आपूर्ति की जा रही है जो कि सुनिश्चित रूपसे काष्ठ उत्पादन में नीलगिरि के लिये 17% और विलायती सारु में 28% वृद्धि हुई है। उत्पादकता में आगे की सुधार के लिये दूसरी पीढ़ी की प्रजनन प्रगति में है।

विलायती सारु, सी.जुंगुनियाना, नीलगिरि, बबूल के प्रजातियों और सागौन आदि के लिये बीज उपवनों को विकसित किया गया है। उद्गम और प्रजातियों के अच्छे प्रतिरूप के संयोजन से नीलगिरि, विलायती सारु और इमली में बेहतर फल प्राप्त करने और लकड़ी की लुगदी में फास्ट ट्रेक सुधार प्राप्त करने के लिये आंतर और अंतर विशिष्ट संकर का निर्माण किया गया है। विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में संकर का परीक्षण किया जा रहा है।



